जीवन विद्या शिक्षा का प्रारूप

जीवन की महत्ता

- जीवन और सत्ता में स्व का पहचान -
- जीवन जागृति की नित्य समीचीनता -
- जीवनजागृति क्रम स्वयं नियति और व्यवस्था व्यवस्था में से होवे
- जागृति क्रम में प्रणाली पद्धति नीति.
- जागृति क्रम में ही स्वतन्त्रता, स्वराज्य, स्वानुशासन
- जागृति क्रम में मानव परम्परा फलत: अखण्ड राष्ट्र व समाज वैभव

जिसके लिए अध्ययन की वस्तुएँ →

- अस्तित्व
- अस्तित्व में परमाणु में विकास
- मानव व्यवहार दर्शन
- मानव अनुभव दर्शन

प्रबोधन प्रणाली व पद्धति

- प्रतिपादन (प्रमाण सहित) मूल भवधारणा.
- परिभाषा
- व्याख्या
- परिचर्चा
- गोष्ठी
- कार्य गोष्ठी.

जीवन विद्या

जीवन का लक्ष्य 'स्व के प्रति विश्वास' [जीवन जागृति प्रमाणिकता + समाधान सम्पन्नता]

प्रमाण = अनुभव - व्यवहार प्रयोग में सामरस्यता

प्रवर्तन का आधार = प्रमाणिकता समाधान समृद्धि

"जीवन शक्ती के लिए शरीर जीवन प्रकाशन का माध्यम है"

जीवन तृप्ति जागृति (प्रमाणिकता व समाधान) ही है।

जीवन जागृति क्रम :-

अनुभव व्यवहार व प्रयोग समुच्चय है।

- अस्तित्व
- विकास
- जागृति

- अस्तित्व = सह अस्तित्व = सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति।
- विकास = गठन क्रिया आचरण पूर्णता = जीवन + जीवन जागृति = अभ्युदय + निश्रेयस।

सुख शांति संतोष आनन्द = धर्म = जागृति
जागृति का साक्ष्य = प्रमाणिकता = अभिव्यक्ति
प्रमाण + प्रमाणिकता = धर्म का स्थिति रूप
प्रमाण की सम्प्रेषणा = समाधान = गति रूप,

व्यवहार गति = व्यवस्था = (मूल्य + चरित्र + नैतिकता का अविभाज्य वर्तमान)
व्यवस्था = तन, मन, धन का सदुपयोग + सुरक्षा = समाधान।
मानवीयता पूर्ण प्रणाली = सदुपयोग + सुरक्षा,
मानवीयता = मानव का स्वत्व

संबंध = मूल्यों का निर्वाह = अभय

जन्म से — माता-पिता का पहचान
भाई-बहन का पहचान
~~ने~~ विश्वास निर्वाह

माता-पिता के साथ
आज्ञा पालन
सुबह शाम तक की दिनचर्या जिसमें
बिस्तर से उठते ही बड़े के प्रति गौरव
सभी भाई बहन के प्रति स्नेह।

आज्ञा पालन,
सुबह उठना व्यायाम, स्वास्थ्य के लिए.
मनोबल के लिए अध्ययन
पढाई जिसमें मूल्यों व संबंधों को पढना
बड़े व गुरु का पहचान उनके गौरव पूर्ण आचरण का निर्वाह
सम्पूर्ण संबंध व मूल्यों का पहचान।

अस्तित्वमें भौतिक बौद्धिक (जीवन) अध्यात्मिकता में अविभाज्यता।